जल स्वावलंबन से ही खुलेगी आत्मनिर्भरता की राह

महेश शुक्ल • नोएडा

विश्व जल दिवस

सतर्कता की जरूरत

- भारत में भूजल पुनर्भरण की योजनाओं पर तेजी से काम की आवश्यकता
- किसानों और कृषि पर विशेष ध्यान देने से जल में जल्द हो सकेंगे आत्मनिर्भर

भारत में भूजल ही सब कुछ है। हमारी जल आवश्यकता का दो तिहाई यहीं से पूरा होता है। लगातार भूजल स्तर गिर रहा है। राजस्थान में 70 और कुछ राज्यों में तो 90 प्रतिशत तक जल आवश्यकता का स्रोत भूजल ही है। देश में आत्मनिर्भरता लानी है तो सबसे पहले हमें जल स्वावलंबी होना होगा। ऐसा तथ्य और आंकड़ों की दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक जान पड़ता है।

विश्व जल दिवस के अवसर पर 'जलपुरुष' राजेंद्र सिंह ने जागरण के साथ विशेष बातचीत में उपरोक्त बिंदुओं को रेखांकित करते हुए आजादी के अमृत महोत्सव में जल स्वावलंबन की महत्ता और देश के सामने आसन्न जल संकट और भविष्य की रूपरेखा पर चर्चा की।

मितव्ययी न हुए तो बढ़ेगी समस्या: राजेंद्र सिंह कहते हैं कि भारत में भूजल का संरक्षण और मितव्ययी प्रयोग न किया गया तो हम दक्षिण पश्चिम एशिया व अफ्रीकी देशों की तरह जलवायु परिवर्तन शरणार्थी बनने पर विवश हो जाएंगे। यह पूरे देश के लिए अत्यंत कष्टप्रद अनुभव होगा। सख्त लहजे में चेतावनी दी कि अभी जिन देशों का भूजल खत्म हुआ, वहां के लोग यूरोप के देशों में जा रहे हैं। यूरोपीय देश जल संकट के मारे इन लोगों को जलवायु परिवर्तन शरणार्थी कह रहे हैं, हिकारत की निगाह से देख रहे हैं। इससे यूरोप व अफ्रीकी देशों के बीच तनाव की स्थिति बन रही है जो विश्व के लिए ठीक नहीं है। हम नहीं चेते तो हम भी जलवायु परिवर्तन शरणार्थी बन सकते हैं। वह साफ करते हैं कि अभी सौभाग्य से भारत की स्थिति बहुत खराब नहीं है लेकिन अगर ऐसे ही हालात रहे तो अगले तीन चार साल में हमारे शहर जीरो बेस बन जाएंगे।

केवल औद्योगिक उन्नति से आत्मनिर्भरता नहीं: राजेंद्र सिंह ने कहा कि भारत की आत्मनिर्भरता केवल खेती में सबको रोजगार मिलने से भी जुड़ी है। सबको पीने के लिए जल व खाने के लिए अन्न मिलेगा तो हम भारत में गौरव के साथ जी सकेंगे। बिना गौरव के कैसी आत्मनिर्भरता। जब तक भारत पानी में स्वावलंबी नहीं होगा, आत्मनिर्भर नहीं होगा। उन्होंने देश के कृषि विश्वविद्यालयों व कृषि विज्ञानियों की जिम्मेदारी व भूमिका तय करते हुए कहा कि किसान को पता ही नहीं कि कब पानी बरसेगा, कितना बरसेगा। भारत में कृषि विश्वविद्यालयों में जलवायु परिवर्तन से संबंधित विभाग हैं, लेकिन किसी विश्वविद्यालय ने किसानों को नहीं बताया कि कैसे कम पानी में अच्छा उत्पादन करें।

शेष >> पेज 12

संबंधित खबरें >> जागरण सिटी

हमारी जल आस्था से अंग्रेज हारे

विश्व के कई गुलाम देशों का उदाहरण देते हुए राजेंद्र सिंह ने कहा कि पिछले सात साल में पानी के लिए 120 से अधिक देशों की यात्रा में मैंने देखा है कि ज्यादातर जो गुलाम देश थे, उन पर राज करने वालों ने अपने देशों की कंपनियों को गुलाम देश के भूजल की लीज दे दी। कंपनियों ने इसका व्यापार किया तो लोगों का अधिकार छिन गया। हम गौरव कर सकते हैं कि भारत में अंग्रेज 200 साल तक राज करते रहे, लेकिन पानी पर अधिकार नहीं कर सके। यह चमत्कार था, क्योंकि हम पानी को आस्था मानते थे, सम्मान करते थे। मेहमान को सबसे पहले पानी देना, गंगा में स्नान आदि हमारी जल आस्था है, जिसे अंग्रेज तोड़ नहीं सके। आस्था पर किसी का कब्जा नहीं हो सकता।

जल स्वावलंबन से ही खुलेगी...

वर्षा चक्र को फसल चक्र से जोड़ने की जिम्मेदारी कृषि विश्वविद्यालयों की है। कहा कि खेती को वर्षा चक्र से जोड़ने का काम भारत के स्वावलंबन का काम है। आधे पानी में उत्पादन बढ़ेगा। अफ्रीकी व दक्षिण पश्चिमी एशिया के जल संकट वाले देशों की गलतियों के बारे में इंगित करते हुए राजेंद्र सिंह कहते हैं कि हमने अंग्रेजों के समय वह गलतियां नहीं कीं और अब भी उनसे बचना चाहिए। अभी हमारे भूजल बैंक में 28 प्रतिशत पानी बचा है। इसे संरक्षित करना होगा।

अटल भूजल योजना पर रहे पूरा ध्यान: भूजल संकट को दूर करने के लिए राजेंद्र सिंह मानते हैं कि अटल भूजल को प्रमुखता से चलाया जाना चाहिए। यही मुख्य योजना बने तो भारत जल स्वावलंबी बन जाएगा। सारा कोष इसी योजना की तरफ केंद्रित करना होगा। 80,000 करोड़ की नल से जल योजना तभी सफल होगी जब भूजल होगा। रेन वाटर हार्वेस्टिंग पर सवाल पर जलपुरुष ने कहा कि देश में दो दशक से इस पर काम हो रहा है, लेकिन लक्ष्य से दूर है। सभी राज्यों में रूफ टाप रेन वाटर हार्वेस्टिंग का अनिवार्य प्रविधान किया गया है, लेकिन आप देखिए धरातल पर कितनी यह दिखती है।